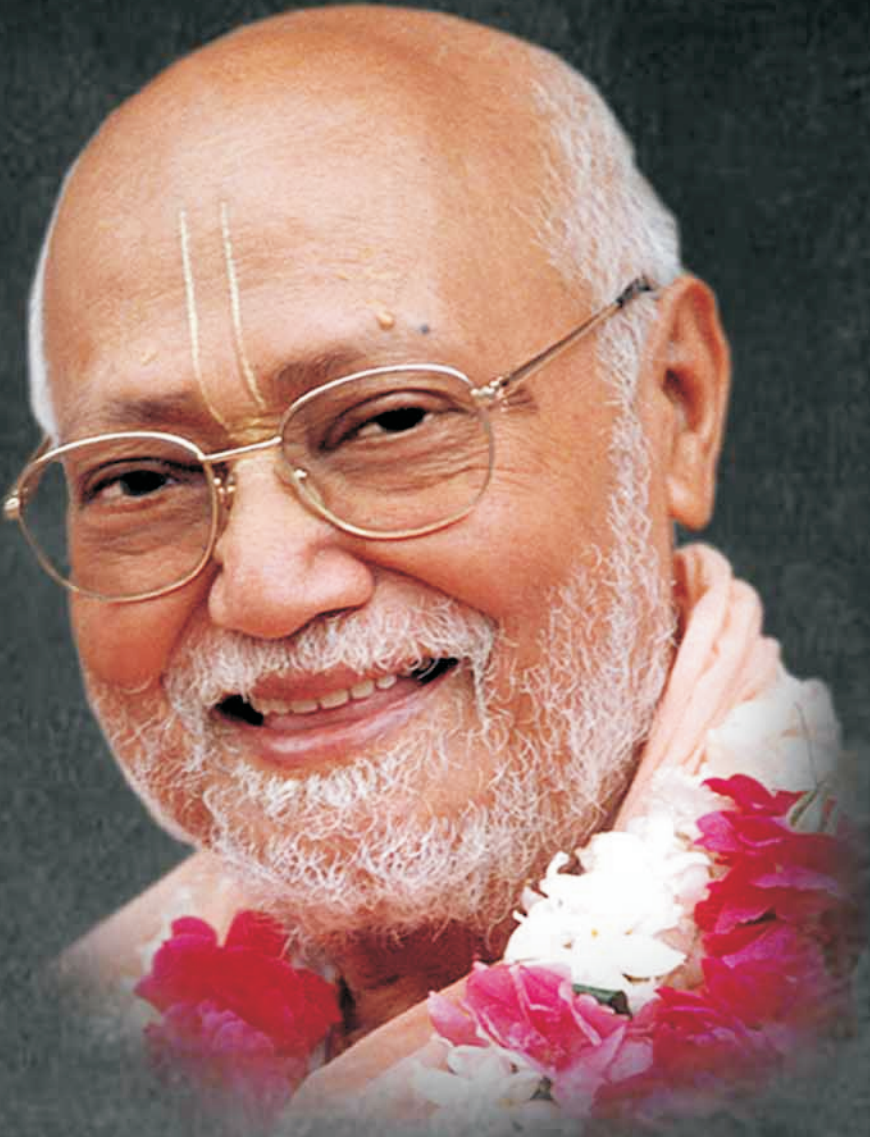


# पावन जीवन चरित्र



श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी  
महाराज जी का जीवन चरित्र





निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ  
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,  
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108  
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी  
महाराज विष्णुपाद जी के  
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डस्वामी  
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज  
जी द्वारा सम्पादित



# प्रथम खंड

भाग - 8

---

श्रील गुरुदेव जी का  
श्रीगौड़ीय मठ प्रतिष्ठान में  
योगदान

---

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

दीक्षा ग्रहण के कुछ समय बाद ही श्रील गुरुदेव श्रीकृष्ण व श्रीकृष्ण भक्तों की सेवा में सम्पूर्ण रूप से आत्मनियोग करने के लिए मठवासी हो गये। आप आजीवन ब्रह्मचारी थे अर्थात् गृह परित्याग करते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा वृहद्धती रूप से आपने मठ में प्रवेश किया था। आपकी एकान्तिक गुरु - निष्ठा, विष्णु - वैष्णव सेवा के लिए सदैव

तत्परता, सेवाओं में बहुमुखी  
योग्यता, निष्कपटता,  
आलस्यरहित सहा उद्यम युक्त  
सेवा प्रवेष्टा तथा सब कार्यों में  
आपकी सफलता को देख कर  
श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती  
प्रभुपाद जी ऐसा कहा करते थे  
कि आप में अद्भुत Volcanic  
Energy है।

श्रीगौड़ीय मठ में आपके  
आने (लगभग 1928 में) से  
लेकर श्रील प्रभुपाद जी के प्रकट  
काल 1936 तक तथा उसके  
बाद 1945 तक श्रीगौड़ीय मठ

प्रतिष्ठान में योगदान के लिए आपने जो कुछ किया तथा जहाँ-तहाँ जाकर श्रीमन् महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार करके दुर्गति प्राप्त जीवों का उद्धार किया इस विषय में आपके अलौकिक व्यक्तित्व की महिमा के बारे में आपके गुरुभाइयों तथा चरणाश्रित प्राचीन शिष्यों तथा पूर्वाश्रम के परिचित व्यक्तियों से जो कुछ जानकारी प्राप्त हो सकी है। वह संक्षिप्त रूप से प्रकाशित की जा रही है। इसके इलावा सन् 1946 से, अर्थात् जब से मुझे श्रील



गुरुदेव जी के सान्निध्य में आने  
का सौभाग्य प्राप्त हुआ, के बाद  
की घटनाएँ विस्तृत रूप से  
लिखना सम्भव हो सकेगा।





Play Store

SrilaGurudeva